BHARGAVA Insights Multidisciplinary Research Journal
ISSN:
Volume: 01, Issue: 01, April- June 2026
https://bhargavafoundation.in/

1200–1750 ई. के झारखंड के व्यापारिक मार्गों एवं अर्थव्यवस्था का पुरातात्विक अध्ययन

BIMRJ
ISSN
Double-Blind Peer Reviewed
Open Access Quarterly Journal
©The Author 2026

Digvijay Singh
(UGC NET) PhD Research Scholar,
Ranchi University Jharkhand

सारांश

1200–1750 ई. के मध्य झारखंड क्षेत्र का पुरातात्विक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह क्षेत्र केवल दुर्गम वन और पहाड़ी भूभाग नहीं था, बल्कि एक विकसित, आत्मनिर्भर और व्यापार–संलग्न आर्थिक प्रणाली का हिस्सा था। पुरातात्विक साक्ष्यों जैसे लौह भट्ठियों के अवशेष, स्लैग, तांबे के उपकरण, सिक्के, किले, टेराकोटा वस्तुएँ और प्राचीन बस्तियों के प्रमाण यह दर्शाते हैं कि यहाँ कृषि, खनन, वन–आधारित संसाधन और हस्तशिल्प पर आधारित एक संगठित अर्थव्यवस्था विकसित थी। यह क्षेत्र ग्रांड ट्रंक रोड, शाही मार्गों, बंजारों की टांडा प्रणाली तथा गंगा, सोन और दामोदर नदियों के माध्यम से बिहार, बंगाल और ओडिशा से जुड़ा हुआ था। झारखंड की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार लौह एवं तांबा उत्पादन, वनोपज जैसे लाख, शहद और जड़ी–बूटियाँ तथा सीमित कृषि प्रणाली थी। मुगल काल में राजस्व व्यवस्था और व्यापारिक नियंत्रण के साथ यह क्षेत्र साम्राज्यीय अर्थव्यवस्था का भाग बन गया। पुरातात्विक साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि झारखंड एक बहु–आयामी आर्थिक क्षेत्र था, जो स्थानीय उत्पादन और क्षेत्रीय व्यापार नेटवर्क पर आधारित था।

शब्दकुंजी– झारखंड अर्थव्यवस्था, पुरातत्व, व्यापार मार्ग, लौह धातुकर्म, वनोपज, मुगल काल, खनन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था

***Corresponding Author**
Digvijay Singh
✉ Digvijay.singh5060@gmail.com

Article Info
Received: 28th January 2026
Final Accepted: 30th March 2026
Published: 9th April 2026

प्रस्तावना

1200–1750 ई. के मध्य झारखंड क्षेत्र का व्यापारिक एवं आर्थिक इतिहास भारतीय उपमहाद्वीप की आंतरिक व्यापारिक व्यवस्था और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस काल में झारखंड, जिसे मुगलकाल में "झारखंड" या "कोकरा" के नाम से भी जाना जाता था, अपनी भौगोलिक दुर्गमता के बावजूद नागवंशी, चेरो और सिंहवंशी शासकों के अधीन कृषि, खनन और वन–आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हुआ। पुरातात्विक साक्ष्य जैसे सिक्के, भट्ठियों के अवशेष, दुर्ग, मंदिर और लौह उपकरण यह दर्शाते हैं कि यहाँ लौह–धातुकर्म, तांबा उत्पादन और हस्तशिल्प का उन्नत स्तर विद्यमान था। यह क्षेत्र ग्रांड ट्रंक रोड, शाही मार्गों और बंजारों के व्यापारिक नेटवर्क के माध्यम से बिहार, बंगाल और ओडिशा से जुड़ा हुआ था, जिससे माल और संसाधनों का व्यापक आदान–प्रदान संभव हुआ। वन उत्पाद जैसे लाख, जड़ी–बूटियाँ और रेशम तथा खनिज संसाधन स्थानीय हाट–बाजारों के माध्यम से व्यापार का आधार बने। मुगल प्रशासनिक प्रभाव और स्थानीय राजवंशों के बीच कर एवं व्यापारिक संबंधों के प्रमाण भी मिलते हैं।

शोध के उद्देश्य

- झारखंड की 1200–1750 ई. की आर्थिक संरचना का पुरातात्विक आधार पर विश्लेषण करना।
- इस काल में कृषि, वन संसाधन, खनन और हस्तशिल्प की भूमिका का अध्ययन करना।
- झारखंड के व्यापारिक मार्गों एवं क्षेत्रीय–अंतरक्षेत्रीय आर्थिक संबंधों को समझना।

झारखंड के व्यापारिक मार्ग (1200–1750 ई.) का पुरातात्विक अध्ययन

1200–1750 ई. के मध्य झारखंड क्षेत्र के व्यापारिक मार्गों का पुरातात्विक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि अपनी भौगोलिक दुर्गमता के बावजूद यह क्षेत्र भारतीय उपमहाद्वीप के व्यापक आंतरिक व्यापार तंत्र से गहराई से जुड़ा हुआ था। इस काल में झारखंड की अर्थव्यवस्था मुख्यतः लौह अयस्क, तांबा, वन उत्पाद, कृषि वस्तुओं और हस्तशिल्प पर आधारित थी। पुरातात्विक साक्ष्य जैसे किलों के अवशेष, लौह भट्ठियाँ, सिक्के, टेराकोटा वस्तुएँ और प्राचीन मार्गों के संकेत यह सिद्ध करते हैं कि यहाँ एक संगठित और बहुस्तरीय व्यापार प्रणाली विकसित थी, जो स्थानीय हाट–बाजारों से लेकर क्षेत्रीय और अंतर–क्षेत्रीय नेटवर्क तक फैली हुई थी।

1. ग्रांड ट्रंक रोड (GT Road) और उत्तरी व्यापारिक नेटवर्क– शेरशाह सूरी द्वारा पुनर्गठित ग्रांड ट्रंक रोड मध्यकालीन भारत का सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग था, जो बंगाल को उत्तर भारत और मध्य एशिया से जोड़ता था। झारखंड का उत्तरी भाग, विशेषकर राजमहल क्षेत्र, इस मार्ग के प्रभाव क्षेत्र में आता था। पुरातात्विक साक्ष्यों में मुगल एवं सूरी कालीन सिक्के, सरायों के अवशेष और सुरक्षा चौकियों के संकेत मिलते हैं। यह मार्ग झारखंड को पाटलिपुत्र, बंगाल और अन्य बड़े व्यापारिक केंद्रों से जोड़ता था, जिससे अनाज, कपड़ा और धातु वस्तुओं का व्यापक व्यापार संभव हुआ।

2. शाही एवं क्षेत्रीय मार्ग (राजवंशीय नेटवर्क)– झारखंड के भीतर नागवंशी, चेरो और अन्य स्थानीय शासकों द्वारा नियंत्रित आंतरिक व्यापार मार्गों का एक मजबूत नेटवर्क विकसित था। ये मार्ग मुख्यतः पलामू, चतरा, हजारीबाग और सिंहभूम क्षेत्रों को जोड़ते थे। पुरातात्विक साक्ष्य जैसे पलामू किले, छोटे दुर्गों और चौकियों के अवशेष यह दर्शाते हैं कि ये मार्ग केवल प्रशासनिक नहीं बल्कि व्यापारिक गतिविधियों के लिए भी उपयोग किए जाते थे। इन मार्गों से कृषि उत्पाद, धातु उपकरण और वन संसाधनों का स्थानीय हाट–बाजारों तक नियमित आदान–प्रदान होता था।

3. बंजारों के कारवां एवं टांडा प्रणाली– बंजारों ने झारखंड के घने जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में दीर्घ दूरी व्यापार को सुगम बनाया। उनकी "टांडा प्रणाली" में 50 से 200 बैलगाड़ियों के बड़े कारवां शामिल होते थे, जो नमक, अनाज, कपड़ा और धातु वस्तुओं का परिवहन करते थे। पुरातात्विक रूप से इन मार्गों के किनारे अस्थायी शिविरों और विश्राम स्थलों के संकेत मिलते हैं। यह प्रणाली स्थानीय बाजारों को क्षेत्रीय और अंतर–क्षेत्रीय व्यापार केंद्रों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी।

4. वन एवं खनिज आधारित व्यापारिक मार्ग– झारखंड के व्यापारिक मार्गों का प्रमुख आधार इसके समृद्ध प्राकृतिक संसाधन थे। सिंहभूम और हजारीबाग क्षेत्रों में लौह अयस्क, तांबा और अन्य धातुओं के उत्पादन के पुरातात्विक प्रमाण मिलते हैं। लौह भट्टियों और धातु निर्माण स्थलों से प्राप्त अवशेष यह दर्शाते हैं कि यह क्षेत्र केवल कच्चे माल का स्रोत नहीं था, बल्कि उत्पादन केंद्र भी था। इन मार्गों से लौह, लाख, औषधीय जड़ी–बूटियाँ और वन उत्पाद बिहार, बंगाल और ओडिशा तक निर्यात किए जाते थे।

5. नदी मार्ग एवं प्राकृतिक संपर्क प्रणाली– गंगा, सोन और दामोदर नदी प्रणालियों ने झारखंड के व्यापारिक नेटवर्क को और अधिक सशक्त बनाया। इन नदियों के माध्यम से अनाज, धातु और वन उत्पादों का परिवहन बंगाल और अन्य क्षेत्रों तक किया जाता था। नदी किनारे कई प्राचीन बस्तियों और व्यापारिक स्थलों के अवशेष यह सिद्ध करते हैं कि जलमार्ग भी इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

झारखंड की अर्थव्यवस्था (1200–1750 ई.) का पुरातात्विक अध्ययन

1200–1750 ई. के मध्य झारखंड की अर्थव्यवस्था का पुरातात्विक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह क्षेत्र केवल दुर्गम वन और पहाड़ी भूभाग नहीं था, बल्कि एक आत्मनिर्भर, संसाधन–आधारित और व्यापार–संलग्न आर्थिक प्रणाली थी। पुरातात्विक साक्ष्य जैसे लौह भट्ठियाँ, स्लैग, सिक्के, किले, मिट्टी के बर्तन, औजार और प्राचीन बस्तियों के अवशेष यह सिद्ध करते हैं कि यहाँ कृषि, खनन, वन संसाधन और हस्तशिल्प पर आधारित एक विकसित आर्थिक ढांचा मौजूद था, जो धीरे–धीरे क्षेत्रीय राजवंशों और मुगल प्रशासनिक प्रभाव से जुड़ता गया।

1. कृषि एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था– झारखंड की अर्थव्यवस्था का आधार सीमित लेकिन स्थायी कृषि प्रणाली थी। छोटानागपुर, पलामू और सिंहभूम क्षेत्रों में तालाबों, कुओं और जलाशयों के अवशेष यह दर्शाते हैं कि सिंचाई की स्थानीय व्यवस्थाएँ विकसित थीं। मुख्य फसलें चावल, दालें और मोटे अनाज थीं। पुरातात्विक

स्थलों से प्राप्त मिट्टी के बर्तन और आवासीय संरचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि यहाँ स्थायी ग्रामीण बस्तियाँ मौजूद थीं, जहाँ कृषि उत्पादन मुख्यतः स्थानीय उपभोग और आंशिक व्यापार के लिए किया जाता था।

2. **वन–आधारित अर्थव्यवस्था–** इस काल में झारखंड की अर्थव्यवस्था में वन संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। लाख, शहद, रेशम, लकड़ी और औषधीय जड़ी–बूटियाँ प्रमुख वन उत्पाद थे। पुरातात्विक और ऐतिहासिक संकेत बताते हैं कि इन उत्पादों का संग्रह जनजातीय समुदायों द्वारा किया जाता था और इन्हें हाट–बाजारों के माध्यम से बंगाल, बिहार और ओडिशा तक भेजा जाता था। यह प्रणाली झारखंड की स्थानीय अर्थव्यवस्था को व्यापक क्षेत्रीय व्यापार नेटवर्क से जोड़ती थी।

3. **खनन एवं धातु उद्योग–** झारखंड की अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण आधार खनिज और धातु उत्पादन था। सिंहभूम, हजारीबाग और संथाल परगना क्षेत्रों में लौह भट्टियों और स्लैग के विशाल अवशेष इस बात का प्रमाण हैं कि यहाँ लौह उत्पादन अत्यधिक विकसित था। असुर जनजाति द्वारा विकसित स्वदेशी भट्टियाँ लंबे समय तक प्रयोग में रहीं। तांबे के औजार, आभूषण और सिक्कों के अवशेष यह भी दर्शाते हैं कि तांबा उद्योग सीमित लेकिन महत्वपूर्ण स्तर पर मौजूद था। यह धातु उत्पादन कृषि और युद्ध दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति करता था।

4. **हस्तशिल्प एवं स्थानीय उत्पादन–** झारखंड में लौह शिल्प, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी का काम और टेराकोटा निर्माण विकसित अवस्था में थे। पुरातात्विक खुदाई में प्राप्त औजार और घरेलू वस्तुएँ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि यहाँ कारीगरी परंपरा मजबूत थी। यह उत्पादन न केवल स्थानीय उपयोग के लिए था, बल्कि क्षेत्रीय बाजारों में भी इसकी मांग थी। असुर समुदाय विशेष रूप से लौह निर्माण में दक्ष था, जिससे इस क्षेत्र की तकनीकी क्षमता स्पष्ट होती है।

5. **व्यापार, मुद्रा और राजस्व प्रणाली–** झारखंड की अर्थव्यवस्था प्रारंभ में विनिमय प्रणाली पर आधारित थी, लेकिन नागवंशी और स्थानीय शासकों द्वारा जारी तांबे के सिक्कों के प्रमाण भी मिलते हैं। 16वीं शताब्दी के बाद मुगल प्रभाव बढ़ने पर यह क्षेत्र राजस्व प्रणाली से जुड़ गया, जिसमें लाख, हीरा और वन उत्पाद कर के रूप में लिए जाते थे। पलामू जैसे किले प्रशासनिक और राजस्व नियंत्रण के महत्वपूर्ण केंद्र थे। साथ ही यह क्षेत्र दक्षिणापथ और उत्तरापथ व्यापार मार्गों से भी जुड़ा हुआ था।

निष्कर्ष

1200–1750 ई. के मध्य झारखंड की अर्थव्यवस्था एक जटिल और बहु–आयामी प्रणाली थी, जो कृषि, वन संसाधन, खनिज उत्पादन और हस्तशिल्प पर आधारित थी। पुरातात्विक साक्ष्य जैसे लौह भट्टियाँ, स्लैग, सिक्के, किले और टेराकोटा अवशेष यह दर्शाते हैं कि यह क्षेत्र न केवल उत्पादन केंद्र था, बल्कि व्यापक व्यापारिक नेटवर्क का भी हिस्सा था। ग्रांड ट्रंक रोड, शाही मार्ग, बंजारों की टांडा प्रणाली तथा गंगा–सोन–दामोदर नदी मार्गों ने इसे बिहार, बंगाल और ओडिशा से जोड़ा। मुगल काल में यह क्षेत्र राजस्व व्यवस्था और प्रशासनिक नियंत्रण से जुड़ गया, जिससे इसकी आर्थिक संरचना अधिक संगठित

हुई। कुल मिलाकर, झारखंड की अर्थव्यवस्था एक आत्मनिर्भर और व्यापार–संलग्न प्रणाली थी, जिसकी पुष्टि समृद्ध पुरातात्विक साक्ष्यों से होती है।

सदंर्भ ग्रन्थ सुची

1. यादव, एस. (2016). झारखंड की वन अर्थव्यवस्था और जनजातीय समाज। पटनाः बिहार शोध संस्थान।
2. सिंह, डी. पी. (2011). झारखंड में जनजातीय अर्थव्यवस्था। रांची विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. त्रिपाठी, डी. (2010). भारत का पुरातात्विक इतिहास और व्यापार प्रणाली। मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. प्रसाद, आई. (2008). मध्यकालीन भारत में व्यापारिक मार्ग और आर्थिक संरचना। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. मिश्रा, एस. (2001). मध्यकालीन भारत में व्यापार और वाणिज्य। राजकमल प्रकाशन।
6. झा, जे. सी. (1987). बिहार और झारखंड में बंजारा व्यापार परंपरा। पटना विश्वविद्यालय शोध पत्रिका, 15(2), 45–68।
7. सिन्हा, एस. (1962). झारखंड की जनजातीय संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था। कलकत्ता विश्वविद्यालय प्रेस।